ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 417-419

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

# चम्पारण की थारूओं की जैविक सम्पदा एवं नदियाँ

**साधु शरण सिंह**
सहायक शिक्षक, नवीनादर्श सार्वजनिक +2 विद्यालय, इसलामपुर–नालन्दा (बिहार), भारत

Received- 25.06.2020, Revised- 29.06.2020, Accepted - 30.06.2020 E-mail: - dr.ramnyadav@gmail.com

***सारांश :*** ***चम्पारण प्रशासनिक दृष्टिकोण से पूर्वी और पश्चिमी चम्पारण यानी दो जिलों में विभक्त है. पर्यावरण के लिहाज से संयुक्त चम्पारण 3525 वर्गमील में फैला हुआ है जिसके 364 वर्गमील में सघन वन क्षेत्र है। चम्पारण का पश्चिमी क्षेत्र प्राकृतिक वन सम्पदा से सम्पन्न है। इसके उत्तर में हिमालय की पहाड़ियों की श्रृंखला है, तो दक्षिण क्षेत्र में गंगा के मैदानी भाग है। हिमालय की पहाड़ियों और गंगा के मैदानी भाग के बीच में तराई का इलाका है। इस प्रकार चम्पारण हिमालय के शिवालिक पहाड़ियों की तराई एवं गंगा के मैदानी इलाके के बीच का क्षेत्र है, भौगोलिक विविधता के साथ कई नदियों की प्रचुर जल सम्पदा, मौसमी बदलाव, मिट्टी में विविधता होने के कारण चम्पारण एक छोटे से इलाके में जैविक सम्पदा का अकूत भंडार अपने दामन में समेटे हुए है।***

***कुंजीभूत शब्द– महिलाओं, एकतरफा,अतिशयोक्तिपूर्ण, कल्पनाएँ, प्रयोग, रोजमर्रा, लिंगपरक, भावुक, निर्दयी ।***

अनेक प्रकार के प्राकृतिक पौधों से सम्पन्न इस क्षेत्र में कई बन हैं। सखुआ बसे महत्वपूर्ण इमारती वृक्षों का जंगल मनोर, कैला, सोनहा, भपसा, हरहा, मसान, श्रीया द्वाराडाह तथा पंदुई की घाटी में पाया जाता है, कपल नाले के बीच रधीया गांव के ऊपर धूप का वन है, जो समुद्र तल से 1000 से 1700 फीट की उंचाई पर अवस्थित है। मदनपुर एवं उदयपुर वन क्षेत्र में सेमल का जंगल है। गंडक, सिकरहना, पंडई आदि नदियों के किनारे मूंज, नरकट, पटेर, खैर, सेमल, शीशम, सीरीश, जामन आदि पेड़ों के जंगल हैं. मदनपुर बसहिया नाला और उदयपुर जंगल के नालों के साथ बेंत की झाड़ियां हैं। गनौली और कोतराहा के नजदीक गंडक की तलहटी में घास बड़े पैमाने पर पाई जाती है, मदनपुर जंगल के रहुआ नाले के साथ नमीयुक्त जगहों में वैसा, आरंग, जामून, हजार, शीशम, खैर, सेमल के पेड़ पाए जाते हैं। नरदेवी स्थान के नजदीक हारा तथा शक्तिहारा में बांस के घने जंगल बहुतायत में है. इस क्षेत्र में कई प्रकार के बांस एवं लम्बी घास देखने को मिलती है। गंडक के किनारे रझावा, जैफी तथा मदनपुर रेता में झाऊ का वन है।

चम्पारण में पाई जाने वाली जैविक विविधता का पूरा ब्यौरा समग्र रूप से तो उपलब्ध नहीं है मगर इतना तो तय है कि यह पूरा इलाका वन सम्पदा से परिपूर्ण है। हिमालय की तलहटी और तराई के इलाके में पुष्पीय पौधों की अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। इसके अलावा इस क्षेत्र में छोटे–छोटे अपुष्पीय पौधे और घासों की अनेक प्रजातियाँ भी बहुतायत में मिलती हैं। घाटी के ऊपरी हिस्से में पाई जाने वाली पौधों की प्रजातियों में झींगन, आसन, बहेरा, करम, सफेद, सीरीश, अरीध, सेमल, बांझी, पीपल आदि प्रमुख हैं। मध्य हिस्से में भी अनेक प्रजातियों के औषधीय तथा गैर औषधीय पौधे काफी तादाद में पाए जाते हैं। इनमें कूझी, टीकूल, किंकर, जामुन, हरे, बोदरा, पाण्डर तथा गम्हार के पौधे प्रमुख है। भीतरी हिस्से में अधाई, करीयत, रोहन, बेरी, दूध करैया, साहुल, कचनार, लोध, पीरोज, आंवला आदि की अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं, निचले भाग में लीट, भाट, अगमहार, गोहार, बीलछुला, गालफसूली, मन्ना, वनकपास, मोटवा, वनभूजा, सतावर, करही आदि के साथ कोरथा, पूंज, फूलझार, लम्बी घास तथा महलन, महाथ, पानील, अरार, पीपर, वनदतुअन के पौधों की लताएं भी पर्याप्त मात्रा में पाई जाती हैं। पीयार, मंडर, आसन, बांझी, भेलवा, हारा, बहीयन, मौना, पीरार, आंवला, लोध, पाडर, तीलाई आदि पौधे भी थोड़े–बहुत मात्रा में पाए जाते हैं। झाड़ीनुमा पौधों में रोबेना, वनभूजी. बीलछुल, फरही, रोरसगजा, समसीहार, गुरुच, अमरबेल, रत्ती के अलावा सवार्ड तथा सारा या कोरथा घासें यहां प्रा.तिक रूप में प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं। यहां मिश्रित वन बड़े क्षेत्र में फैले हुए हैं। चम्पारण के वनक्षेत्रों में अनेक जनजातियां निवास करती हैं– जिनमें थारू. धांगड़,उरांव, गोंड़ आदि प्रमुख है। इन जनजातियों को विभिन्न प्रकार के पौधों से स्वाभाविक लगाव है, इस वनक्षेत्र के अधिकांश हिस्से में थारुओं का निवास है। थारुओं के गांव, प्रकृति, स्त्रियां, निश्च्छलता, संयुक्त परिवार, आखेट, भूत–प्रेत, जादू–टोना आदि की मान्यता, कृषि, अर्थव्यवस्था, आतिथ्य सत्कार, पहनावा, गोदना, साज–श्रृंगार, पूजा–अर्चना, नृत्य–संगीत, विभिन्न सामाजिक एवं जातीय संस्कार आदि से इनके

**अनुरूपी लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

प्रकृति प्रेम यानी पादपों की उपयोगिता और सामंजस्य को सहज ही समझा जा सकता है। पेड़–पौधे इनके जन–जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है जिनसे अलग इनके अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

जैव विविधता और थारू समाज के अध्येता डॉ० रत्नेश कुमार आनंद के अनुसार थरुहट क्षेत्र में कुल ग्यारह प्रकार के वन पाए जाते हैं। इनमें धूप वन, पहाड़ी सखुआ, घाटी सखुआ, मिश्रित वन, बेतवन, रिभेराइन एवं दलदली नमीयुक्त वन के साथ झाऊ तथा वनीय गांव में पाए जाने वाले पौधों की प्रजातियाँ आदि प्रमुख है। हिमलयी तराई क्षेत्र के इन वनों में अनेक असाध्य बीमारियों में उपयोग आने वाले अचूक औषधीय पौधे बहुतायत में मिलते हैं, जिनकी जानकारी वहां के स्थानीय वनवासियों को होती है। इन वनवासियों की स्वास्थ्य रक्षा जंगली पादपों पर ही निर्भर है। आम वनवासियों में आधुनिक चिकित्सा पद्धति के प्रति न तो कोई रुचि है न और इन्हें चिकित्सा की कोई सुविधा उपलब्ध है। इनकी सभी बीमारियों का निवारण इनके गुरो, ओझाओं, विजहरियों, बाबाओं आदि इन्हीं वनस्पतियों से ठीक करते है। इन्हें अनेक वनस्पतियों के औषधीय गुणों की अच्छी जानकारी होती है। यह जानकारियाँ उन्हें परम्परागत मिलती हैं और पीढ़ी दर पीढी से इनके बीच संवाहित होती रहती हैं।

ये वनवासी साँप, बिच्छु के दंश से लेकर ह्रदय रोग, मिरगी, पागलपन, वातरोग, घाव, कोढ़, नपुंसकता दूर करने से लेकर गर्भधारण की शक्ति में वृद्धि आदि का इलाज वन औषधियों से ही करते हैं। इस इलाज पर आज भले ही सवाल खड़े किए जाए मगर इनके ओझा–गुनियों को इन पादप औषधियों पर आगाध विश्वास है। यह विश्वास आम आदिवासियों के मन में इस कदर बैठा हुआ है कि इसके आगे इन्हें आधुनिक चिकित्सा बकवास लगती है। यह ठीक है कि ये जानकारियां कहीं लिखित रूप में उपलब्ध नहीं है बल्कि कुछ खास लोगों तक ही सीमित हैं जिसका वे इन भोले–भाले आदिवासियों को ठगने में भी उपयोग करते हैं।

कनइल, सर्पगंधा, तलपुरइन, गर्भज्योति, कामराज, जलजमुनी, गोरखमुंडी, दूधकराय, कुकरबना, वधनाठी, धनवआ, मुझा, पाड़र, भाटिन, कचनार, खमखम, धान काफूल, कनवा आदि आम प्रचलित औषधीय पौधे हैं, जिनसे इस क्षेत्र के थारू अपनी बीमारियों का इलाज करते हैं। दूसरी ओर सही संरक्षण और देखरेख के अभाव में इन दुर्लभ औषधीय पौधों का क्षय भी हो रहा है।

पश्चिम चम्पारण जिले का थरुहट क्षेत्र प्राचीन लोकोक्ति 'भारत सोने की चिड़िया है, को अक्षरशः सत्य साबित करता है. आप विश्वास करें या न करें, परन्तु यह सत्य है कि थरुहट की घरती पर सोने की नदियां बहती हैं। दोन पहाड़ से निकलने वाली मसान, भलूही, अछोह, कापून, भगनहवा, भपसा, हरहा, मनौर और कईला आदि अनेक पहाड़ी नदियां हैं जिनमें बालू से भी बारीक सोने के कण बहते हैं। पश्चिम चम्पारण जिले के रामनगर थाने के लक्ष्मीपुर, नौरंगिया, रूपवलिया, शेरवा, सेमरहनी, बेलाटांडी, बेतहानी, झझरी, मजूरहा, बनकटवा गोबरहिया दोन तथा लोकरिया थाने के तरूआ, देवरिया, कुनई, हड़वाटीला, पाड़ड़खोप, बैरियाकला एवं बैरिया खुर्द आदि दर्जनों ऐसे गांव हैं जहां के थारू विगत कई दशकों से पहाडी नदियों से सोना छानने का काम कर रहे हैं।

सोना छानने का यह काम अत्यंत कठिन है। पानी और बालू से सोने के बार कणों को अलग करना सबके बस की बात नहीं है। इसकी एक विशेष तकनीक है। सोना छानने के काम में लगे लगभग डेढ़ हजार लोग सतसाल की लकड़ी की तख्ती पर एक प्रकार का चिपचिपा लेप लगाते हैं और नदियों की तलहटी से निकाली गई बालू से तख्ती के सहारे सावधानीपूर्वक सोने के बहुत ही महीन कणों को छानते हैं। इस के बाद सोने के कणों को एक प्रकार के जंगली पौधे के पत्तों में सहागे के साथ लपेट कर मिट्टी के बरतन में रख कर आग में गलाया जाता है। सोने के कण आग में गल कर एक हो जाते हैं। इस प्रकार सोने की गोली या डली तैयार होती है, जिसे रामनगर, हरनाटांड़, वाल्मीकिनगर, बेतिया, मोतिहारी तथा नेपाल स्थित त्रिवेणी एवं वीरगंज के बाजार में ले जा कर बेचते हैं।

सोने के कण छानने के काम में लगे लोग दिन भर में औसतन 50 से 100 रुपए का सोना निकालते हैं। किन्तु इसकी इन्हें उचित कीमत नहीं मिल पाती है। स्वर्णकारों एवं दलालों की धोखधड़ी और धूर्तता के कारण 100 रुपए के स्थान पर मुश्किल से उन्हें 40 से 50 रुपए ही मिल पाते है। उन्हें अपनी कमाई में से पुलिस तथा वन रक्षकों को भी कुछ हिस्सा देना पड़ता है। वरना ये लोग उन्हें नदियों से सोना नहीं छानने देते हैं तथा झूठे मामलों में फंसा कर तंग करते हैं।

सोना छानने का काम काफी श्रमसाध्य तथा कठिन है। पाड़ड़खोप गांव के एक थारू परमेश्वर काजी ने कहा–'काम की कठिनता का अनुमान इसी बात से लगता है कि सोना छानने वाले अधिकांश लोगों के हाथ–पांव दिन भर पानी और बालू में रहने के कारण सड़ जाते हैं।' स्वर्णकार भी तरह–तरह के हथकंडे अपना कर सोना छानने वालों को ठगते हैं। हराटांड के सत्यनारायण चौधरी नामक एक सामाजिक कार्यकर्ता तथा 'भारतीय थारू कल्याण

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

महासंघ' के सक्रिय सदस्य ने बताया, 'ये लोग मजदूरों को तरह–तरह के झांसें दे कर सोने को नकली साबित कर देते हैं और कम दामों पर खरीद लेते हैं, जबकि यह सोना उच्च कोटि का होता है। सोने में खोट साबित करने के लिए ये सुनार पहले से ही पीतल की कुछ छोटी–छोटी गोलियां बना कर रखते हैं, जब मजदूर उनके पास सोना बेचने आते हैं, तब ये सुनार बड़ी सावधानी से सोने की गोलियों से पीतल की गोलियां बदल लेते हैं।'

स्थानीय मजदूरों से सोना खरीद कर स्वर्णकार उसे बगहा, रामनगर, बेतिया के बाजारों में ऊंचें दामों पर बेचते हैं. इन शहरों में कई स्वर्णकार हैं, जो इस सोने की खरीद–बिक्री करते हैं। एक अनुमान के अनुसार, बुधवार को लगने वाले हरनाटांड़ के साप्ताहिक बाजार में स्थानीय स्वर्णकारों द्वारा सैकड़ों ग्राम सोने की खरीद–बिक्री होती है, जिसे देश के अन्य भागों तथा नेपाल के बाजारों में बेचा जाता है। इस काम में लगे थारू मजदूरों को जहाँ उचित कीमत नहीं मिल पाती है, वहीं इस काम में लगे स्वर्णकार मालामाल बनते जा रहे हैं। आम लोगों का कहना है, कि दोन पहाड़, जहां से ये तमाम नदियां निकलती हैं अथवा नदियों के रास्ते में कहीं सोने का विष्ठाल भंडार है, जहां से स्वर्ण कण धीरे–धीरे जलधाराओं से घिस कर जल में मिल जाते हैं और नदियों में चले आते हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एस०के० श्रीवास्तव : दि थारूज, ए स्टडी इन कल्चरल डाइनैमिक्स ।
2. एम०एल० पटेल : चेंजिंग लैंड प्रॉब्लम्स ऑफ ट्राइबल इंडिया ।
3. कमला देवी चट्टोपाध्याय : ट्राइबलिज्म इन इंडिया।

*****